बी. ए. भाग-2
प्रधान-हिन्दी

रमेश कुमार यादव
हिन्दी विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर (बिहार)



प्रश्न:- 'सिन्दूर की होली' के आधार पर मनोरमा का चरित्र-चित्रण-

मनोरमा का विवाह तब हुआ था जब वह आठ वर्ष की थी और उसके दो वर्ष बाद ही विधवा हो गई। इस प्रकार वैवाहिक जीवन के आनन्द से वह सर्वथा अनभिज्ञ रही। होश सम्भालने के समय से ही वह विधवा है। अपने वैधव्य को मनोरमा त्याग, तपस्या, साधना, अनासक्ति के उच्च आदर्शों के रूप में ग्रहण कर अपनी निष्ठा से निभा रही है। रंग और कूँची अर्थात् चित्रकला की जो शिक्षा और उसमें जो कुशलता उसे प्राप्त है, वह उसको जीवन-यापन के लिए प्रयुक्त करती है, इससे वह किसी पर बोझ बनने से बचती है। अन्य विधवाओं के समान वह पराश्रित नहीं है। यह उसके स्वाभिमान का मूल कारण है। इसी कारण ही वह भारतीय विधवाओं की दयनीयता का प्रतिनिधित्व नहीं करती। आदर्शवादी होने पर भी नाटककार ने उनके चरित्र में अनेक आधुनिकतम तत्वों का समावेश कर दिया। चित्रकला का व्यावसायिक आधार तो इसका प्रमाण है ही, मनोज की पत्नी नहीं, प्रेमिका बनने का प्रस्ताव भी प्रमाण है।

लेकिन ऐसा जीवन बिताने पर भी समाज उसे चैन से नहीं जीने देता। मुरारीलाल अपनी बेटी की समवयस्का मनोरमा से प्रणय की भीख माँगता है। कैसा विचित्र है यह समाज? लेकिन मनोरमा ऐसे पशुओं से भयभीत होने वाली नहीं थी, उसमें दृढ़ आत्मबल था। यही कारण है कि

अपने को अभी तक सुरक्षित रखे हुए है।

मनोरमा के प्रति मनोज जी आकर्षित हैं। लेकिन वह स्पष्ट शब्दों में मनोज के समक्ष अपनी स्थिति स्पष्ट कर देती है कि यह ठीक है वह मनोज के प्रति एक आत्मीयता का अनुभव करती है, लेकिन मनोज को उसकी आत्मीयता की ऊँचाई भी जाननी चाहिए। मनोज उसके वैशिष्ट्य को समझने की चेष्टा करें। उसे समझ लेना चाहिए कि मनोरमा विधवा है, ज्वालामुखी है। वह मनोज को अपना दूल्हा नहीं बना सकती, हाँ प्रेमी बना सकती है। मनोरमा मनोज का हाथ पकड़ कर संसार में एक अभिनव प्रयोग - सिद्धि के लिए उतरने को प्रस्तुत है। लेकिन उसके लिए यह आवश्यक है कि विधवा मनोरमा के साथ मनोज विधुर बन कर रहने को प्रस्तुत हो। मनोरमा इस अभिनव प्रयोग द्वारा नर-नारी के शुद्ध सात्विक परस्पर प्रेम का, जिसमें वासना का लवलेश न हो, नूतन आदर्श प्रस्तुत करना चाहती है। इस दृष्टि से प्रस्तुत नाटक में मनोरमा के समूचे व्यक्तित्व को ही एकतत्व प्रयोग की संज्ञा दी जा सकती है।

वैसे तो मनोज ने मुरारीलाल को भी आश्वस्त किया है कि उसने विधवा मनोरमा का हाथ जीवन भर अविवाहित रहने के लिए पकड़ा है, इसलिए नहीं कि उसे अपनी पत्नी बनाये। लेकिन मनोज का यह निश्चय तब जड़ जाता है जब मनोरमा उसे यह बताती है कि वह निःसंग रहने के उद्देश्य से सब कुछ त्याग कर ऋषिकेश जा रही है। वह पुरुषोचित दुर्बलता के वशीभूत

ही उसे विवाह के लिए तैयार कर लेना चाहता है परन्तु ऐसा नहीं होता। यह मनोरमा के दृढ़ निश्चय की स्पष्ट स्थिति है। वह जानती है कि विधवा के विवाह की सामाजिक स्थिति वैधव्य-समस्या का समाधान नहीं है।

मनोरमा की विधवा-विवाह आन्दोलन में तनिक भी रुचि नहीं है। वह वैधव्य के आदर्श को त्याग, संकल्प, साधना और तपस्या का मार्ग मानती है। उसकी बुद्धि के अनुसार वैधत्व समाज के लिए गौरव की वस्तु है, कलंक की नहीं। मनोरमा नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व की भी कल्पना नहीं करती। वह कहती है, "स्वतंत्र स्त्रीत्व आज दिन के नये विचार, जो संसार को एकदम स्वर्ग बना देना चाहते हैं, उनमें से एक है। लेकिन इस नये स्वर्ग की कल्पना के मूल में कोई आदर्श नहीं है, हाँ प्रवृत्तियों की घुड़दौड़ के लिए यह काफी मैदान दे सकेगा।" स्थितियों और विचारों की विसंगतियाँ मनोज के समान मनोरमा के चरित्र में भी इन्हीं रूपों में विद्यमान है।

मनोरमा मानती है कि आत्मा का रस शरीर में नहीं है, घृणा को तज देने में है, चित वृत्ति के निरोध-योग में है। वैधत्व इसी आनन्दयोग की सिद्धि का अवसर देता है। सेवा आज उपकार के इस आदर्श को मिटाकर हम प्रवृत्तियों की बागडोर ही ढीली करेंगे अधिक से अधिक उपयोग की प्रवृत्ति को ही प्रोत्साहन देंगे। यहाँ नाटककार भी आदर्शवादी हो गया प्रतीत होता है कि जो समस्या नाटक की असंगति ही है।

इस प्रकार मनोरमा का चरित्र सबसे अधिक बौद्धिक एवं व्यक्तित्व आदर्श प्रतीत होने वाली अनेक विसंगतियों से पूर्ण है। तर्कों का प्रवाह एवं ठोसपन उसके व्यक्तित्व के सबल पक्ष का उद्घाटन करता है, पर वह ग्राह्यता के अधिक निकट नहीं प्रतीत होता। विवेक के पुट से उसका चरित्र चमक उठा है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि मनोरमा इस नाटक की एक ऐसी स्त्री-पात्र है जो आदर्श और यथार्थ के समन्वय पर पूर्ण विश्वास करती है। इसी साँचे में उसके पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हुआ है कि जो सामाजिक स्थितियों का ही परिचायक है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट- प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर (बिहार)